कृषि नवाचार
हिन्दी पत्रिका
ISSN: 3048-6092
https://www.krishinavachar.in
खण्ड 01 भाग 10 जनवरी, 2025

कृषि की नई दिशा: प्राकृतिक खेती

पवन कुमार
बी.एस-सी (आनर्स) कृषि, आर.एस.एम. (पी.जी.) कॉलेज, धामपुर, बिजनौर, उत्तर प्रदेश
E-mail: pawankumar.pbt17@gmail.com

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ की अर्थव्यवस्था का बड़ा हिस्सा कृषि पर निर्भर है। परंतु, पिछले कुछ दशकों में रासायनिक खेती के अत्यधिक उपयोग ने मिट्टी की उर्वरता, पर्यावरण संतुलन और किसानों की आर्थिक स्थिति पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है। इस स्थिति में, प्राकृतिक खेती एक प्रभावशाली समाधान के रूप में उभर रही है। यह न केवल पारंपरिक खेती के तरीकों को पुनर्जीवित करती है, बल्कि इसे पर्यावरण और आर्थिक दृष्टि से भी लाभकारी बनाती है।

कृषि भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है और देश की 60% से अधिक जनसंख्या कृषि पर निर्भर है। परंतु पिछले कुछ दशकों में, रासायनिक खेती के अति प्रयोग ने मिट्टी की उर्वरता, पर्यावरण और किसानों की आर्थिक स्थिति पर नकारात्मक प्रभाव डाला है। इस स्थिति में, "प्राकृतिक खेती" एक समाधान के रूप में उभरी है। यह न केवल किसानों को आत्मनिर्भर बनाती है बल्कि पर्यावरण संतुलन को बनाए रखने में भी सहायक है। इस लेख में, हम प्राकृतिक खेती की अवधारणा, इसके लाभ, चुनौतियां, और इसे अपनाने के तरीकों पर विस्तार से चर्चा करेंगे।

प्राकृतिक खेती क्या है ?

प्राकृतिक खेती एक ऐसा कृषि पद्धति है जो रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों और कृत्रिम संसाधनों के बिना खेती करने पर बल देती है। इसमें प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित कर खेती की जाती है। इस प्रणाली को जापानी कृषि वैज्ञानिक मासानोबु फुकुओका ने लोकप्रिय बनाया, और भारत में इसे सुभाष पालेकर जैसे वैज्ञानिकों ने बढ़ावा दिया।

प्राकृतिक खेती एक ऐसी कृषि पद्धति है जिसमें रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का उपयोग पूरी तरह से त्याग दिया जाता है। इसके स्थान पर जैविक सामग्री, जैसे गाय का गोबर, गोमूत्र, और फसल अवशेषों का उपयोग किया जाता है। यह पद्धति जापान के मसनोबू फुकुओका और भारत में सुभाष पालेकर द्वारा लोकप्रिय हुई। इसे "शून्य बजट प्राकृतिक खेती" (ZBNF) भी कहा जाता है क्योंकि इसमें न्यूनतम लागत पर अधिकतम उत्पादन प्राप्त होता है।

प्राकृतिक खेती के चार प्रमुख सिद्धांत

1. **बिना जुताई:** मिट्टी को उसके प्राकृतिक रूप में छोड़ दिया जाता है।
2. **बिना रासायनिक उर्वरक:** केवल प्राकृतिक स्रोतों से पोषण दिया जाता है।
3. **बिना कीटनाशक:** कीट नियंत्रण के लिए जैविक समाधानों का उपयोग किया जाता है।
4. **मल्चिंग:** भूमि को जैविक पदार्थों से ढका जाता है ताकि नमी बनी रहे।

प्राकृतिक खेती के प्रकार

- **शून्य बजट प्राकृतिक खेती (ZBNF):** इसमें किसानों को खेती के लिए कोई अतिरिक्त खर्च करने की आवश्यकता नहीं होती। गोबर, गोमूत्र और अन्य प्राकृतिक तत्वों का उपयोग किया जाता है।
- **जैविक खेती:** रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के बिना खेती।
- **परंपरागत खेती:** पुराने पारंपरिक तरीकों से खेती करना।

प्राकृतिक खेती का महत्व

1. **पर्यावरण संरक्षण:**
   - रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का उपयोग कम होने से जल और मिट्टी प्रदूषण घटता है।
   - जैव विविधता को संरक्षित करता है और भूमि की उर्वरता बनाए रखता है।
   - ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में कमी आती है।
2. **आर्थिक लाभ:**
   - किसान रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों पर खर्च कम करते हैं।
   - स्थानीय संसाधनों का उपयोग कर उत्पादन लागत घटती है।
   - उपज की गुणवत्ता बेहतर होने से बाजार में अच्छा मूल्य मिलता है।
3. **उपभोक्ता स्वास्थ्य:**
   - प्राकृतिक खेती से उत्पन्न फसलें रसायनमुक्त होती हैं, जो स्वास्थ्य के लिए लाभकारी होती हैं।
   - जैविक उत्पादों की बढ़ती मांग के कारण किसान सीधे लाभ प्राप्त कर सकते हैं।
4. **जल प्रबंधन:**
   - जैविक खाद और मल्चिंग के उपयोग से जल धारण क्षमता बढ़ती है।
   - फसलों के लिए पानी की आवश्यकता कम होती है।

प्राकृतिक खेती के तरीके

1. **जीवामृत:** यह गोबर, गोमूत्र, गुड़, बेसन और मिट्टी का मिश्रण होता है, जो पौधों को पोषण प्रदान करता है।
2. **घनजीवामृत:** यह ठोस जैविक खाद है, जिसे मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने के लिए उपयोग किया जाता है।
3. **बीजामृत:** बीजों को बोने से पहले गोमूत्र, गोबर और मिट्टी के घोल में डुबोया जाता है, जिससे बीजों को रोग प्रतिरोधक क्षमता मिलती है।
4. **मल्चिंग:** मिट्टी को जैविक अवशेषों से ढककर जल संरक्षण किया जाता है।

5. **सपोषण खेती:** फसल चक्र और मिश्रित फसल प्रणाली अपनाकर मिट्टी की उर्वरता और फसल की गुणवत्ता बढ़ाई जाती है।

प्राकृतिक खेती की चुनौतियां

- **प्रारंभिक कठिनाइयाँ:** रासायनिक खेती से प्राकृतिक खेती की ओर परिवर्तन में समय लगता है।
- **जागरूकता की कमी:** किसानों को इसके फायदे और तकनीकों के बारे में कम जानकारी है।
- **मौसमी निर्भरता:** यह पद्धति काफी हद तक मौसम पर निर्भर करती है।
- **बाजार समर्थन की कमी:** प्राकृतिक उत्पादों के लिए उचित मूल्य और बाजार उपलब्धता की कमी।
- **श्रम की अधिक आवश्यकता:** प्राकृतिक खेती में श्रम की अधिक आवश्यकता होती है।

सफल उदाहरण:

- **सुभाष पालेकर के प्रयास:** शून्य बजट प्राकृतिक खेती के जनक सुभाष पालेकर ने इसे देशभर में बढ़ावा दिया।
- **आंध्र प्रदेश मॉडल:** राज्य सरकार ने प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएं लागू की हैं।
- **हिमाचल प्रदेश के किसान:** यहां के किसानों ने प्राकृतिक खेती को अपनाकर अपनी आय में वृद्धि की।

ISSN: 3048-6092
https://www.krishinavachar.in
खण्ड 01 भाग 10 जनवरी, 2025

भारत में प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के प्रयास

1. **सरकारी योजनाएं:** राष्ट्रीय कृषि विकास योजना (RKVY): प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहित करने के लिए।
2. **प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना:** जल संरक्षण और प्राकृतिक खेती को बढ़ावा।
3. **प्रशिक्षण कार्यक्रम:** किसानों को प्राकृतिक खेती के तरीकों पर प्रशिक्षित करना।
4. **सहकारी समितियां:** किसानों को प्राकृतिक खेती के उत्पादों के लिए बाजार उपलब्ध कराना।
5. **शैक्षणिक संस्थान:** कृषि विश्वविद्यालयों द्वारा प्राकृतिक खेती पर अनुसंधान और प्रशिक्षण।

भविष्य में प्राकृतिक खेती की संभावनाएं

- **आर्थिक लाभ:** कृषि उत्पादों की गुणवत्ता और निर्यात में वृद्धि।
- **पर्यावरणीय लाभ:** जलवायु परिवर्तन के नकारात्मक प्रभाव को कम करना।
- **स्थायी विकास:** प्राकृतिक खेती से किसानों की आय में स्थिरता और दीर्घकालिक विकास।
- **स्वास्थ्य में सुधार:** रसायनमुक्त भोजन से जनसंख्या का स्वास्थ्य बेहतर होगा।

निष्कर्ष

प्राकृतिक खेती आज की आवश्यकता है, जो हमें पर्यावरण के संरक्षण के साथ-साथ आर्थिक और स्वास्थ्य लाभ भी प्रदान करती है। सरकार, किसान, और समाज के सामूहिक प्रयासों से इसे व्यापक रूप से अपनाया जा सकता है। इस दिशा में पहल करके हम न केवल अपने कृषि क्षेत्र को सशक्त बनाएंगे, बल्कि भविष्य की पीढ़ियों के लिए एक स्थायी और स्वस्थ वातावरण भी सुनिश्चित करेंगे।

●●●